कविग्राम

वर्ष 2, अंक 2, फरवरी 2021

ऋतुराज

आया है...

कविग्राम

वर्ष 2, अंक 2, फरवरी 2021

परामर्श मण्डल
सुरेन्द्र शर्मा
अरुण जैमिनी
विनीत चौहान

सम्पादक
चिराग़ जैन

सह सम्पादक
प्रवीण अग्रहरि

शोध तथा संग्रहण
मनीषा शुक्ला
शनि अवस्थी

प्रकाशन स्थल
नई दिल्ली

सर्वाधिकार
कविग्राम

उपरोक्त सभी पद मानद तथा अवैतनिक हैं।

आवरण सज्जा : **प्रवीण अग्रहरि**

kavigram.com
kavigramparivar
8090904560
facebook.com/kavigram
TheKavigram@gmail.com

— सम्पर्क —
सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर कविग्राम से जुड़ने के लिये इन आइकॉन्स पर स्पर्श करें।

सम्पादकीय

मौसम का सम्बन्ध मन से है। मन प्रसन्न हो तो पतझड़ के सूखे पत्तों में भी संगीत की अनुभूति होने लगती है और मन विकल हो तो खिले हुए पलाश भी आँखों को झुलसाने लगते हैं। कालिदास का विरही यक्ष मेघ को भी दूत समझ बैठता है और रत्नावली से मिलने के उद्वेग में तुलसी साँप को भी रस्सी समझ कर चढ़ जाते हैं।

...तो क्या ऋतुओं के चित्रण के सब प्रसंग कोरा मनविलास है? क्या इनमें कोई सार्थकता नहीं है? वास्तव में मौसम मनोदशा की दिशा निर्धारित नहीं कर सकता किन्तु उसकी गति को घटा-बढ़ा ज़रूर सकता है। मन विरही हो तो वसन्त का मौसम विरह की पीड़ा को बढ़ा देता है जबकि ग्रीष्म ऋतु से तप्त सृष्टि के सम्मुख निजी पीड़ा कम जान पड़ती है। ठीक ऐसे ही ज्यों ग्रीष्म ऋतु के ताप से प्रेम का सागर सूख तो नहीं पाता किन्तु वैसा छलछला भी नहीं पाता, जैसा वसन्त में छलछलाता है।

यही कारण है कि किसी भी रस का कवि अपनी रचनाओं को ऋतुओं के बिम्ब से न तो अछूता रख सकता है, न ही ऐसा प्रयास करता है। मौसम, प्रकृति से लेकर काव्य तक में स्वत: घटित होता है। अभाव का चित्रण करनेवाले रचनाकार को वर्षा ऋतु में सड़क पर भीगते मनुष्य दिखाई देते हैं तो शृंगार रस का कवि बारिश में भीगी हुई नायिका को रस-निष्पत्ति का माध्यम बना लेता है। शीत ऋतु में वीर रस का कवि हिमालय पर तैनात सिपाहियों के शौर्य को प्रणाम करता है तो करुण रस की कविता अस्थिभेदक हवाओं में ठिठुरते बेघरों की पीड़ा को अभिव्यक्त करती है।

मौसम कविता के लिये अपनी प्रकृति नहीं बदलता किन्तु कविता प्रकृति के अनुरूप अपना मौसम अवश्य बदल सकती है। मौसम, ईश्वर द्वारा रची गई कविता है और कविता, मानव द्वारा रचा गया मौसम है। हाँ, एक बात इन दोनों में समान है कि इन दोनों की ही सर्जना में सहजता अपरिहार्य है। नवाज़ देवबन्दी साहब के दो मिसरों के साथ बात पूरी करता हूँ –

मौसमों की साज़िश से पेड़ फल तो देते हैं
साज़िशों के फल लेकिन ज़ायक़ा नहीं देते

facebook

ऋतुराज आया है

वसन्त अर्थात् शीतलहर के प्रकोप से त्रस्त सृष्टि पर दुलार की ऊष्मा का फिरता-सा हाथ। वसन्त अर्थात् गुनगुनी धूप के स्पर्श से प्रकृति सुन्दरी का खिल उठना। वसन्त अर्थात् नीरस ठूठ में भी मादक हवा के संसर्ग से रस उत्पन्न हो जाना। वसन्त अर्थात् सुन्दर का और सुन्दर हो उठना। वसन्त अर्थात् असुन्दर का भी सुन्दर हो जाना।

यही कारण है कि वसन्त की संज्ञा एक मौसम मात्र तक सीमित न रहकर एक मनोदशा की द्योतक बन गई है। प्रेम और पावनता के ताने-बाने से बुनी वासन्ती चूनर पर उल्लास और उत्सव के सितारे स्वत: ही सज उठते हैं।

वसन्त ऋतु में प्रेम, शृंगार, सौंदर्य, सृजन और सत्व का ऐसा प्रसार हो जाता है कि किसी नकारात्मकता के लिए स्थान ही नहीं बचता। हर डाली हरिया उठती है। हर बिरवा पल्लवित हो जाता है। क्यारियाँ सहस्रों फूलों के आभूषण पहन कर बगीचे में टहलने लगती हैं। लताएँ इठलाते हुए जब किसी तने की उंगली थाम लेती हैं तो उस स्पर्श से पूरे वृक्ष की बाँछें खिल जाती हैं। सारी सृष्टि पीताम्बरा हो जाती है। कदाचित इसी कारण श्रीकृष्ण ने गीता में कहा 'ऋतुनां कुसुमाकर:' अर्थात् ऋतुओं में मैं वसन्त हूँ।

ऋतु वर्णन में वसन्त का काव्य मन को दिव्य प्रेम के रंग से रंग देता है। संस्कृत में वाल्मीकि और कालिदास से लेकर प्राकृत में स्वयम्भू तक वसन्त बार-बार कविताओं में उतरा है। हिन्दी का रीतिकाल तो वसन्त से भरा ही पड़ा है। आज भी गाहे-बगाहे हिन्दी की कविताओं में वासन्ती छींटे दिख जाते हैं।

चूँकि वसन्त पंचमी सरस्वती पूजन का पर्व भी है, इसलिए वसन्त ऋतु में सरस्वती-पुत्रों पर वाग्देवी की पर्याप्त कृपा भी होती है। खिलखिलाती हुई दुनिया को देखकर कविमन में खिलखिलाती हुई कविताओं की कलियाँ भी ख़ूब चटकती हैं।

जायसी ने पद्मावत में वसन्त के लिए लिखा :

कुसुम हार और परिमल बासू। मलयागिरि छिरका कबिलासू॥
सौंर सुपेती फूलन डासी। धनि औ कन्त मिले सुखबासी॥
पिउ सँजोग धनि जोबन बारी। भौंर पुहुप संग करहिं धमारी॥
जिन्ह घर कन्ता ऋतु भली, आव वसन्त जो नित्त।
सुख भरि आवहिं देवहरै, दुःख न जानै कित्त॥

पद्माकर ने माधुरी में वसन्त का वर्णन करते हुए अनेक छन्द रचे, जिनमें से यह कवित्त सर्वाधिक लोकप्रिय है :

कूलन में, केलि में, कछारन में, कुंजन में
क्यारिन में, कलित-कलीन किलकन्त है
कहै पद्माकर परागन में पौनहु में
पातन में, पिक में, पलासन पगन्त है
द्वारे में, दिसान में, दुनी में, देस-देसन में
देखौ दीप-दीपन में दीपत दिगन्त है
बीथिन में, ब्रज में, नबेलिन में, बेलिन में,
बनन में, बागन में बगर्‌यो बसन्त है

इसी प्रकार बिहारी का यह दोहा भी ऋतुवर्णन का श्रेष्ठ उदाहरण है :

छकि रसाल सौरभ सने, मधुर माधवी गन्ध।
ठौर-ठौर झूमत झपत, भौंर झौंर मधु अन्ध॥

देव वसन्त का मानवीकरण करते हुए लिखते हैं :

डारि द्रुम-पालन बिछौना नव-पल्लव के
सुमन झिगूला सोहै तन छवि भारि दै
पवन झुलावै केकी-कीर बहरावे देव
कोयल हलावे-हुलसावे कर तारि दै
पूरित पराग सौं उतारौं करै राई-नोन
कंजकली नायिका लतानि सिर-सारि दै
मदन-महीपजू को बालक वसन्त ताहि
प्रातहि जगावत गुलाब चटकारि दै

महाकवि सेनापति भी वसन्त ऋतु के सौन्दर्य का वर्णन करने में पीछे न रह सके, और यह कवित्त रच दिया :

बरन-बरन तरु फूले उपवन वन
सोई चतुरंग संग दल लहियतु है
बन्दी जिमि बोलत विरद वीर कोकिल है
गुंजत मधुप गान गुन गहियतु है
आवे आसपास पुहुपन की सुवास सोई
सोने के सुगन्ध माझ सने रहियतु है
सोभा को समाज सेनापति सुख साज आजु
आवत वसन्त ऋतुराज कहियतु है

बाबा नागार्जुन का औघड़ कवि वसन्त ऋतु में प्रकृति के विलास की साक्षी बनकर लिखता है :

रंग-बिरंगी खिली-अधखिली
किसिम-किसिम की गन्धों वाली स्वादों वाली ये मंजरियाँ
तरुण आम की डाल-डाल, टहनी-टहनी पर
झूम रही हैं, चूम रही हैं!
कुसुमाकर को, ऋतुओं के राजाधिराज को,
इनकी इठलाहट अर्पित है
छुई-मुई की लोच-लाज को।
तरुण आम की ये मंजरियाँ
उद्भित जग की ये किन्नरियाँ
अपने ही कोमल-कच्चे वृन्तों की मनहर सन्धि भंगिमा
अनुपल इनमें भरती जाती
ललित लास्य की लोल लहरियाँ
तरुण आम की ये मंजरियाँ।

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना वसन्त को किसी महन्त का रूपक सिद्ध करते हुए कहते बैठे :

श्रद्धानत तरुओं की अंजलि से झरे पात
कोंपल के मुन्दे नयन थर-थर-थर पुलक गात

अगरु धूम लिए घूम रहे सुमन दिग-दिगन्त
आए महन्त वसन्त
खड़-खड़ खड़ताल बजा नाच रही बिसुध हवा
डाल-डाल अलि पिक के गायन का बन्धा समा
तरु-तरु की ध्वजा उठी जय-जय का है न अन्त
आए महन्त वसन्त

केदारनाथ अग्रवाल ने कामदेव के पंचम शर के प्रभाव से मादक हुई वसन्ती हवा का वर्णन इस तरह किया :

चढ़ी पेड़ महुआ, थपाथप मचाया
गिरी धम्म से फिर, चढ़ी आम ऊपर
उसे भी झकोरा, किया कान में 'कू'
उतरकर भगी मैं, हरे खेत पहुँची –
वहाँ, गेंहुँओं में लहर ख़ूब मारी।
पहर दो पहर क्या, अनेकों पहर तक
इसी में रही मैं! खड़ी देख अलसी,
लिए शीश कलसी, मुझे खूब सूझी –
हिलाया-झुलाया गिरी पर न कलसी!
इसी हार को पा, हिलाई न सरसों,
झुलाई न सरसों,
हवा हूँ, हवा मैं बसंती हवा हूँ!
मुझे देखते ही अरहरी लजाई,
मनाया-बनाया, न मानी, न मानी
उसे भी न छोड़ा – पथिक आ रहा था,
उसी पर ढकेला, हँसी जोर से मैं,
हँसी सब दिशाएँ, हँसे लहलहाते
हरे खेत सारे, हँसी चमचमाती
भरी धूप प्यारी, बसंती हवा में
हँसी सृष्टि सारी!
हवा हूँ, हवा मैं बसंती हवा हूँ!

भारतेन्दु ने बिरहिन के वसन्त का दोहा लिखा- 'परम सुहावन से भए सबै बिरिछ बन बाग। तृबिध पवन लहरत चलत दहकावत उर आग॥' गिरिजाकुमार माथुर ने वसन्त की कविता में केसर के रंगों में रंगे हुए वनों का वर्णन किया तो महीयसी महादेवी ने अपने विरह को वसन्त का रंग देते हुए लिखा— 'छोड़ कोमल फूल का घर, ढूँढ़ती हूँ कुंज निर्झर। पूछती हूँ नभ धरा से- क्या नहीं ऋतुराज आया?' अज्ञेय ने वसन्त में असुन्दर के भी सुन्दर हो उठने की बात कही कि 'पीत वसन दमक उठे तिरस्कृत बबूल, अरे! ऋतुराज आ गया।' सोहनलाल द्विवेदी ने 'आया वसन्त आया वसन्त, छाई जग में शोभा अनन्त' जैसा सहज गीत लिखा तो प्रकृति के चतुर चितेरे कवि सुमित्रानन्दन पन्त ने 'कलि के पलकों में मिलन स्वप्न, अलि के अन्तर में प्रणय गान, लेकर आया प्रेमी वसन्त, आकुल जड़-चेतन स्नेह प्राण।' लिखकर वसन्त की संजीवनी शक्ति का प्रमाण प्रस्तुत कर दिया।

निराला ने 'छवि विभावरी' और 'भरा हर्ष वन के मन नवोत्कर्ष छाया, सखि वसन्त आया' जैसा अमर गीत रचा तो सुभद्राकुमारी चौहान ने 'फूली सरसों ने दिया रंग, मधु लेकर आ पहुँचा अनंग, वधु वसुधा पुलकित अंग-अंग, है वीर वेश में किन्तु कन्त, वीरों का कैसा हो वसन्त' लिखकर शौर्यबोध की याद दिलाई है। बाद में सुभद्रा जी की इसी कविता का प्रतिगीत लिखकर बेढब बनारसी ने हास्यरस को भी वासन्ती रंग में रंग दिया। गोपालदास नीरज ने प्रणय के गीत में वसन्त ऋतु का अवलम्बन थाम कर प्रणय निवेदन किया है - 'धूप बिछाए फूल-बिछौना, बगिया पहने चांदी-सोना, कलियाँ फेंके जादू-टोना, महक उठे सब पात, हवन की बात न करना! आज बसन्त की रात, गमन की बात न करना!' माखनलाल चतुर्वेदी ने वसन्त को 'मनमाना' कहते हुए लिखा — 'फैल गया है पर्वत-शिखरों तक बसन्त मनमाना, पत्ती, कली, फूल, डालों में दीख रहा मस्ताना।' दिनकर ने वसन्त की तुलना वर्षा ऋतु से करते हुए कविता लिखी — 'राजा वसन्त वर्षा ऋतुओं की रानी, लेकिन दोनों की कितनी भिन्न कहानी। राजा के मुख में हँसी, कण्ठ में माला, रानी का अन्तर द्रवित दृगों में पानी॥' भगवतीचरण वर्मा ने लिखा — 'है आज धूप में नई चमक, मन में है नई उमंग आज, जिससे मालूम यही दुनिया, कुछ नई-नई सी होती है, है आस नई, अभिलास नई, नवजीवन की रसधार नई, अन्तर को आज भिगोती है! तुम नई स्फूर्ति इस तन को दो, तुम नई नई चेतना मन को दो, तुम नया ज्ञान जीवन को दो, ऋतुराज तुम्हारा अभिनन्दन!' गोपालसिंह नेपाली रंगों का प्राकृतिक सौन्दर्य देखकर कृत्रिम रंगों को उलाहना देते हुए कहते हैं — 'रग-रग में इतना रंग भरा, रंगीन चुनरिया

झूठी है।' रामेश्वर शुक्ल अंचल ने वसन्त में कवि की मनोदशा का चित्र उकेरते हुए लिखा – 'नील पुलकों में तरंगित चित्रलेखा बन गई छवि, दूर तक सहकार श्यामल रेणुका से घिर चला कवि, लो प्रखर सन सन सुरभि से नागकेशर रूप विह्वल, बज उठी किंकिणि मधुप रव से हुई वनबाल चंचल, आज है मधुमास रे मन!'

डॉ. कुँअर बेचैन ने जब वसन्त को निमंत्रण दिया तो उनके भीतर का पुलक उनके शब्दों में उतर आया – 'बहुत दिनों के बाद चिरैया बोली है, ओ वासन्ती पवन हमारे घर आना।' काव्य की वाटिका में वसन्त की ये बयार बहती हुई वर्तमान तक भी चली आई है। वसन्त से जुड़ी पौराणिक कथा का संदर्भ लेते हुए धर्मेन्द्र सोलंकी गीत रचते हैं – 'कामदेव ने दसों दिशा में इत्र लुटाया है, रति की गोदी में बसंत लल्ला इठलाया है।' श्वेता सिंह ने सुख की अनुभूति को वसन्त के आगमन का इंगित मानते हुए गीत लिखा – 'भाव सोये हुए कुनमुनाने लगे, इन्द्रधनुषी हृदय का गगन हो गया। प्रीति की कोंपलें फूटने लग गयीं, देख ऋतुराज का आगमन हो गया।' ज्ञानप्रकाश आकुल ने जब वसन्त पर लेखनी चलाई तो अभावों की अपेक्षाओं को इस प्रकार शब्द मिल गये – 'ओ वसंत! आओ, स्वागत है। पिछली बारिश जिन पेड़ों पर, बादल, बिजली गिरा गये थे, जो बेचारे ठूँठ हो चुके, क्या उन पर कोयल बोलेगी?' एक अन्य गीत में ज्ञानप्रकाश आकुल विद्रूपताओं से त्रस्त प्रकृति का प्रतीक लेकर वसन्त की दशा का वर्णन करते हैं– 'शीश झुकाए सहमे-सहमे सब पलास के फूल, अट्टहास की मुद्रा में हैं काँटे लिए बबूल, कोयल के हिस्से की खुश्बू लूट रहे हैं बाज। इधर उधर ठूँठों पर बैठा सिसक रहा ऋतुराज।' उधर राजीव राज वसन्त की मूल छवि पर आधारित गीत लिखते हैं – 'लाज शरम सब छोड़ उड़ रहे पंछी पंख पसारे। मौसम करे इशारे, खोल दो बन्द किवारे।' एक गीत में अशोक भाटी वसन्त के पीले पत्ते से संवाद करते हुए ढांढ़स बंधाते हैं – 'छद्म पुलिन्दे मिलें लाख, पर बिल्कुल भी इतराना मत; ओ वसन्त के पीले पत्ते मौसम से घबराना मत!'

इन सबके इतर भी वसन्त ऋतु के बिम्ब और प्रतीक अनेक कवियों को आकृष्ट करते रहे हैं। मौसम की मनमोहक छटा देखकर बिरवे ही नहीं, मन भी पल्लवित होने लगता है। मदमाती हवाओं के स्पर्श से सृष्टि ही नहीं अभिव्यक्ति भी इठलाने लगती है। कोयलिया की कूक से आम ही नहीं कभी-कभी शब्द भी बौराने लगते हैं। प्रकृति के इस मदनोत्सव का सृजन पर सदैव सकारात्मक प्रभाव पड़ा है यही कारण है इन वासन्ती रचनाओं का पराग सृजन को सरस करता रहता है।

■ चिराग़ जैन

फरवरी

2 फरवरी	जयन्ती	रमई काका	
4 फरवरी	जन्मदिन	सुभाष काबरा	facebook
6 फरवरी	जयन्ती	कवि प्रदीप	
	जयन्ती	श्याम ज्वालामुखी	
	पुण्यतिथि	जैमिनी हरियाणवी	
7 फरवरी	जन्मदिन	सत्यनारायण सत्तन	facebook
8 फरवरी	जन्मदिन	वसीम बरेलवी	facebook
	जन्मदिन	रामेन्द्र मोहन त्रिपाठी	facebook
	जन्मदिन	अशोक चक्रधर	facebook
	पुण्यतिथि	निदा फाज़ली	
9 फरवरी	जन्मदिन	प्रियांशु गजेन्द्र	facebook
10 फरवरी	जन्मदिन	बालकवि बैरागी	
	जन्मदिन	मास्टर महेन्द्र	facebook
	जन्मदिन	कुमार विश्वास	facebook
	पुण्यतिथि	सुदामा पाण्डेय धूमिल	
	जन्मदिन	पी के धुत्त	facebook
11 फरवरी	पुण्यतिथि	विष्णु विराट	
12 फरवरी	जन्मदिन	मधुमोहिनी उपाध्याय	facebook
13 फरवरी	जयन्ती	फ़ैज़ अहमद फ़ैज़	
	जयन्ती	गोपाल प्रसाद व्यास	
15 फरवरी	पुण्यतिथि	मिर्ज़ा असदुल्लाह ख़ां ग़ालिब	
	जन्मदिन	बशीर बद्र	
	पुण्यतिथि	सुभद्रा कुमारी चौहान	
	जन्मदिन	सुरेश अवस्थी	facebook
16 फरवरी	जन्मदिन	अतुल कनक	facebook
17 फरवरी	जन्मदिन	सुनील गाइड	facebook
20 फरवरी	जयन्ती	राधेश्याम प्रगल्भ	
	पुण्यतिथि	भवानी प्रसाद मिश्र	
21 फरवरी	जयन्ती	सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला	
	जन्मदिन	दिनेश दिग्गज	facebook
22 फरवरी	जयन्ती	सोहनलाल द्विवेदी	
25 फरवरी	जन्मदिन	किरण जोशी	facebook
	जन्मदिन	सुमन दुबे	facebook
26 फरवरी	जन्मदिन	कैलाश मण्डेला	facebook
	पुण्यतिथि	उदयभानु हंस	

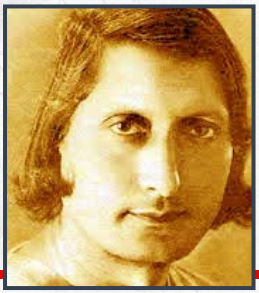

वीणावादिनी वर दे!

वर दे!
वीणावादिनी वर दे!
प्रिय स्वतन्त्र-रव
अमृत-मन्त्र नव
भारत में भर दे!

काट अन्ध-उर के बन्धन-स्तर
बहा जननि ज्योतिर्मय-निर्झर
कलुष-भेद-तम हर, प्रकाश भर
जगमग जग कर दे!
वर दे, वीणावादिनी वर दे!

नवगति, नवलय, ताल-छन्द नव
नवल कण्ठ, नव जलद मन्द्ररव
नव नभ के नव विहग-वृन्द को
नव पर, नव स्वर दे!
वर दे, वीणावादिनी वर दे!

■ **सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला**

नूतन ज्ञान तुम्हीं

सुर सन्धान तुम्हीं
गीत विधान तुम्हीं
शुद्ध बुद्धि की तुम ही प्रदाता
नूतन ज्ञान तुम्हीं

अक्षर-अक्षर दीप जलाकर
शब्द-शब्द के सुमन सजाकर
द्वार खड़ी हूँ लिये आरती
मैं तुम्हरी जन्मों की चाकर
दो वरदान तुम्हीं
सुर सन्धान तुम्हीं
गीत विधान तुम्हीं

पुस्तक, वीणा धारे कर में
मातु विराजी मन-मन्दिर में
जल-थल पवन गगन में लय जो
अनहद नाद प्रकृति के स्वर में
गुंजित गान तुम्हीं

सुर सन्धान तुम्हीं
गीत विधान तुम्हीं
शुद्ध बुद्धि की तुम ही प्रदाता
नूतन ज्ञान तुम्हीं

■ सरिता शर्मा facebook

नया-नया वसन्त दे !

मातु शारदे हमें वो प्यार दे दुलार भाव
ज्ञान दे, विचार दे और प्रीत रीत पन्थ दे
नेक भावना हृदय ये द्वेष दोष मुक्त होय
बुद्धि दे विवेकशील कल्पना अनन्त दे
प्रेम के पराग राग भाग को सुहाग सत्य
सुक्ख का प्रवाह दु:ख का समूल अन्त दे
नेहसिक्त द्वेषरिक्त सावनी फुहार धार
प्रीत से पगा-पगा नया-नया वसन्त दे

हे माँ, सुनो पुकार हमारी
महका दो जग की फुलवारी

घेरे नहीं निराशा हमको
दूर करो हे माँ इस तम को
मातु प्रतीक्षा करें तुम्हारी

वीणा की झंकार सुना दो
मन के सारे द्वेष मिटा दो
दूर बुराई कर दो सारी
हे माँ, सुनो पुकार हमारी

अब तो आकर दरस दिखा दो
मुझको सरगम सत्य सिखा दो
तुम सारे जग की महतारी
हे माँ, सुनो पुकार हमारी

■ रुचि चतुर्वेदी facebook

बाग़ बनाने का मन

कफ़न से काफ़ हटाना है, फ़न बनाना है
हमारा काम दुखन को सुख़न बनाना है

फिर उसके बाद का सब काम तितलियों के सुपुर्द
तुम्हें तो बाग़ बनाने का मन बनाना है

ऐसे लब हैं कि जो इरशाद किया जाएगा
एबीसीडी की तरह याद किया जाएगा

हाय ये फूल से चेहरे कि ख़ुदा जानता था
एक दिन कैमरा ईजाद किया जाएगा

याद भूले हुए लोगों को किया जाता है
भूल जाओ कि तुम्हें याद किया जाएगा

तितली की दोस्ती न गुलाबों का शौक़ है
मेरी तरह उसे भी किताबों का शौक़ है

वरना तो नीन्द से भी नहीं कोई ख़ास रब्त
आँखों को सिर्फ़ आपके ख़्वाबों का शौक़ है

हम आशिक़-ए-ग़ज़ल हैं तो मग़रूर क्यों न हों
आख़िर ये शौक़ भी तो नवाबों का शौक़ है

facebook चराग़ शर्मा

(चित्र सौजन्य : डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र)

कवियों का कैसा हो बसन्त

कवियों का कैसा हो बसन्त

कवि-कवयित्री कहतीं पुकार
कवि-सम्मेलन का मिला तार
शेविंग करते, करती सिंगार
देखो कैसी होती उड़न्त
कवियों का कैसा हो बसन्त

छायावादी नीरव गाये
ब्रजबाला हो, मुग्धा लाये
कविता कानन फिर खिल जाये
फिर कौन साधु, फिर कौन सन्त
कवियों का ऐसा हो बसन्त

कर दो रंग से सबको गीला
केसर मल मुख कर दो पीला
कर सके न कोई कुछ हीला
डूबा सुख-सागर में अनन्त
कवियों का ऐसा हो बसन्त

■ **बेढब बनारसी**

जलियाँवाला बाग़ में वसन्त

यहाँ कोकिला नहीं, काग हैं, शोर मचाते
काले-काले कीट, भ्रमर का भ्रम उपजाते
कलियाँ भी अधखिली, मिली हैं कंटक-कुल से
वे पौधे, व पुष्प शुष्क हैं अथवा झुलसे
परिमल-हीन पराग दाग़-सा बना पड़ा है
हा! यह प्यारा बाग़ ख़ून से सना पड़ा है
ओ, प्यारे ऋतुराज! किन्तु धीरे से आना
यह है शोक-स्थान यहाँ मत शोर मचाना
वायु चले, पर मन्द चाल से उसे चलाना
दु:ख की आहें संग उड़ा कर मत ले जाना
कोकिल गावें, किन्तु राग रोने का गावें
भ्रमर करें गुंजार कष्ट की कथा सुनावें
लाना संग में पुष्प, न हों वे अधिक सजीले
हो सुगन्ध भी मन्द, ओस से कुछ-कुछ गीले
किन्तु न तुम उपहार-भाव आ कर दिखलाना
स्मृति में पूजा हेतु यहाँ थोड़े बिखराना
कोमल बालक मरे यहाँ गोली खा-खाकर
कलियाँ उनके लिये गिराना थोड़ी लाकर
आशाओं से भरे हृदय भी छिन्न हुए हैं
अपने प्रिय परिवार देश से भिन्न हुए हैं
कुछ कलियाँ अधखिली यहाँ इसलिए चढ़ाना
करके उनकी याद अश्रु के ओस बहाना
तड़प-तड़प कर वृद्ध मरे हैं गोली खाकर,
शुष्क पुष्प कुछ वहाँ गिरा देना तुम जाकर
यह सब करना, किन्तु यहाँ मत शोर मचाना,
यह है शोक-स्थान बहुत धीरे-से आना!

■ **सुभद्राकुमारी चौहान**

बारहमासो मोरी छैला

पर्वतों की छाँव में
झरनों के गाँव में
किरणों की डोर ढलती साँझ को है माप रही
पर्वत की ओट कहीं नीमा अलाप रही
बारहमासो मोरी छैला, बेड्यू पाको मोरी छैला

फूल्या बुरांस चैत महक उठी फ्यूलड़ी
पिऊ-पिऊ पुकारती बिरहन म्यूलड़ी
सूनी-सूनी आँखों से राहों को ताक रही
पर्वत की ओट कहीं नीमा अलाप रही
बारहमासो मोरी छैला, बेड्यू पाको मोरी छैला

आड़ुओं की गन्ध देह में अमीय घोल रही
कुमुदिनी मुन्दी हुई पाखुरियाँ खोल रही
सुधियों में खोई-खोई भेड़ों को हाँक रही
पर्वत की ओट कहीं नीमा अलाप रही
बारहमासो मोरी छैला, बेड्यू पाको मोरी छैला

पर्वतों की छाँव में, झरनों के गाँव में
किरणों की डोर ढलती साँझ को है माप रही
पर्वत की ओट कहीं नीमा अलाप रही
बारहमासो मोरी छैला, बेड्यू पाको मोरी छैला

■ राजगोपाल सिंह

कवि सम्मेलन संग्रहालय

णतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में लाल-
कला में सोमवार रात को आयोजित
वि सम्मेलन के अध्यक्ष श्री सोहन
ल द्विवेदी तथा उद्घाटनकर्ता
रामधारी सिंह दिनकर कुछ अन्य
कवि रत्नों के साथ.

बापू तुम्हारी जीत होगी का के चौड़े अखाड़े में

कवि सम्मेलन में श्री दिनकर के उद्गा

(हमारे नगर प्रतिनिधि द्वारा)

नयी दिल्ली, सो

ऐतिहासिक लालकिले में गणराज्य दिवस के उपलक्ष्य में दिल्ली प्रा हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा आयोजित हिन्दी कवि सम्मेलन का उद्घा करते हुए राष्ट्रकवि श्री रामधारी सिंह दिनकर ने कहा कि यह कवि-सम् महात्मा गांधी की जीत का कवि सम्मेलन है, क्योंकि असली जीत न तो की हुई है और न बंगला देश की, असली जीत महात्मा गांधी की हुई है. भी असल में पाकिस्तान की नहीं, असली हार जिन्ना साहब की है, जिन्हों राष्ट्र वाले सिद्धांत पर अलग देश का निर्माण कराया.

वियों द्वारा सशक्त णी में भारत जय की वंदना

(हमारे नगर प्रतिनिधि द्वारा)

दिनेश का अर्धशत पूर्ति समारोह

नयी दिल्ली, सोमवार (स)

जनवरी 1972 के लालक़िला कवि-सम्मेलन में दिनकर जी ने बांग्लादेश बनने की घटना को महात्मा गांधी की जीत घोषित किया। अगले दिन हर अख़बार में यह बयान सुर्ख़ियों में था। चित्र में दिनकर जी के साथ सोहनलाल द्विवेदी जी दखाई दे रहे हैं। चित्र सौजन्य : अल्हड़ बीकानेरी परिवार

बसन्त की बातें और बातों का बसन्त

सबसे पहले आप सबको बसंत की बधाई !

यह बधाई इसलिए महत्वपूर्ण है क्यूँकि यही वो महीना है जब जीव-जंतुओं और प्रकृति को आवाज़ मिली। एक-दूसरे से संवाद बना और हम समझ पाए कि कोई क्या कह रहा है। वैसे आजकल ऐसा होता नहीं है कि जो कहा जा रहा हो वैसा ही हो फिर भी देवी सरस्वती ने बिना आवाज़ की प्रकृति को सुर, लय और ताल प्रदान कर और सुन्दर बना दिया।

देवी सरस्वती ने बसन्त को बसन्त बना दिया वरना सोचिए, कितना सूना-सूना होता। अगर आवाज़ न होती या प्रकृति को रंग न मिलते तो कितना वैभवहीन संसार होता। क्या सुन पाते हम संसद का शोर और हमारे नेताओं के वायदों से भरे हुए भाषण? देवी सरस्वती को एक काम और कर देना चाहिए था, कि आदमी के मुँह से सच के सिवाय कुछ न निकलता। यदि ऐसा होता तो हमारे कितने ही माननीय आज असम्मान के पात्र बन चुके होते, क्योंकि उनके द्वारा भरे गये वचन आज तक तो किसी की ज़िन्दगी में वसन्त ला नहीं पाये। सरस्वती ने मन और वचन के बीच पारदर्शिता की व्यवस्था कर दी होती तो पूरी सियासत अपनी दशा पर भौंचक्की हो गयी होती। सम्बन्धों के बीच का ढकोसला और बनावटी अपनेपन की आदतों पर पलीता लग गया होता। ईश्वर और राष्ट्र से लेकर, परिवार तक के सामने ढोंग का चोला पहनकर महान बनने वाले लोगों से दुनिया बच गई होती।

सबको आवाज़ मिली, फिर चाहे वो मीडिया हो, न्यायालय हो, सरकार हो या अधिकारी। सबको उल्लसित होकर बसन्त का महीना सेलीब्रेट करना चाहिए क्यूँकि यदि उन्हें आवाज़ न मिलती तो जनता

की आवाज़ कैसे दबती। वैसे आवाज़ तो जनता को भी मिली पर उसकी आवाज़ का ज़ोर इन सबकी आवाज़ों के शोर में कहीं दबकर रह गया और वो चाहते हुए भी बसन्त सेलीब्रेट नहीं कर पाती क्योंकि इस शबरी के घर तो कभी राम आए ही नहीं बसंत में।

ख़ैर छोड़िए, आवाज़ मिलना भर क़ाफ़ी नहीं है, जब तक सुनने वाले कान न हों। यदि कोई न सुने तो आप चिल्लाते रहिए और आपकी आवाज़ बस आपके कानों को ही सुनाई देगी, मनाते रहिए अपना बसन्त आप ख़ुद ही और ख़ुश होते रहिए कि आपको आवाज़ मिल गई। चीख़ और चीत्कार यदि सही कानों तक पहुँचती तो बलात्कार जैसी घटनाएँ कबकी रुक चुकी होतीं। धर्म की आवाज़ों को सही कान मिल जाते तो ये दंगे कहाँ होते। भूखे पेट की आवाज़ सही कानों तक पहुँचती। आज लोग भूखे न सोते। किसानों की आवाज़ सही कानों तक पहुँचती तो वे आत्महत्याएँ न करते। बसन्त ने इन सबको आवाज़ तो दे दी पर सुनने वाले कान नहीं दिये।

अहंकार के बादलों में बसन्त का कोई स्थान नहीं है। कितने अच्छे लगते हैं सरसों के खेत में खड़ी सरसों के पीले फूल और उसमें लहलहाती हरियाली। लेकिन आज बसन्त ठण्ड में ठिठुर रहा है और राजनीति उसके सारे रंग छीनने पर आमादा है। जब प्रकृति को सौंदर्य से भरने वाले किसान सड़क पर आ जाएँ तो बसन्त भी आने से ठिठकता है।

सच में कहा जाये तो यह महीना लोकतन्त्र का असली महीना है। सोचिए! अगर 'स्पीच' ही न होती तो फ्रीडम ऑफ स्पीच' कहाँ से होती। इसके लिए देवी सरस्वती का आभार प्रकट कर अपनी लेखनी की आवाज़ को बुलन्द कीजिए।

facebook ■ **जैनेन्द्र कर्दम**

जोबन पर इन दिनों है बहारे-नशाते-बाग़
लेता है फूल भर के यहाँ झोलियाँ बसन्त

चेहरे तमाम ज़र्द हैं दौलत के रंग से
कोठी में हो गया है सरापा अयाँ बसन्त

—मुनीर शिकोहाबादी

अपडेट होकर आओ वसन्त !

वसन्तः रमणीयः ऋतुः अस्ति। इदानीम् शीतकालस्य भीषणा शीतलता न भवति। मन्दं-मन्दं वायुः चलति। विहंगाः कूजन्ति। विविधैः कुसुमैः वृक्षाः आच्छादिताः भवन्ति। कुसुमेषु भ्रमराः गुञ्जन्ति। धान्येन धरणी परिपूर्णा भवति। कृषकाः प्रसन्नाः दृश्यन्ते। कोकिलाः मधुरम् गायन्ति। आम्रेषु मञ्जर्यः दृश्यन्ते। मञ्जरीभ्यः मधु स्रवति।

जिसने भी यह अनुच्छेद लिखा है, पता नहीं क्या सोचकर लिखा है। वैसे संस्कृत में है, तो सोच कर ही लिखा होगा। कृषकाः प्रसन्ना दृश्यन्ते। यह गहरी सोच है। शायद उसने दसवीं मंज़िल पर रहने वाले किलर जीन्स पहने किसान के बारे में लिखा होगा, इसीलिये प्रसन्न लिख दिया। दूर गाँव-खेड़े में इस सर्दी की रात में हाथों से ठण्डे-ठण्डे पानी को मोड़ते हुए और बिना चप्पल पहने किसान को नहीं देखा, देखना भी नहीं था। वरना अनुच्छेद कैसे लिखा जाता। वातानुकूलित कमरे की मन्द-मन्द समीर की तुलना शीतलहर से भी तो करनी थी। आख़िर वसन्त जो आ रहा है, स्पीड में। पहले वसन्त को कवि ख़ुद बुलाता था। आओ ऋतुराज , कोयलिया इन्तज़ार कर रही है, सभी स्वरों को गले में लिये, तुम्हारे स्वागत को।

परसाई जी का वसन्त तो अब है नहीं, जो द्वार खटखटाने लग जाता था। अब अख़बार के किसी कोने में छिपकर आता है। उसे पता है कि कोयलिया अब नहीं गायेगी, बर्ड फ्लू जो चल रहा है। पीली चुनरी का ख़र्चा अब उसे महंगा पड़ रहा है। नई नीति कानून के कारण कमज़ोरी के कारण पीली हो गई आँखों से ही वसन्त आ गया। लेकिन है तो ऋतुओं का राजा, इसलिये मन की बात नहीं कही। बस आँखों ही

आँखों में बता दिया कि भैया आ गया हूँ। कोई बाबा नागार्जुन बन जाओ, और फिर से लिख दो —

तरुण आम की
डाल-डाल, टहनी-टहनी पर
झूम रही है,
चूम रही है कुसुमाकर को
ऋतुओं के राजाधिराज को
इनकी इठलाहट अर्पित है
छुई-मुई की
लोच-लाज को

वसन्त कितना भोला है। उसे पता हीं नहीं कि ये सब अब आउटडेटिड है। कविता की जगह बादशाहों ने रैप शुरू कर दिये हैं। आओ वसन्त, उस शीतल मालकौंस की मस्ती से निकलो! फटी बिवाइयों से डरो मत! नाचो रैप पर। नहीं तो तुम्हें कोई पहचानेगा नहीं। अब हर मौसम में हर मौसम की सब्ज़ी और फूल मिलते हैं। इसलिये अपने आप पर ज़्यादा घमण्ड मत करना! शहरों में तो तुम कभी थे भी नहीं। अब गाँवों में थोड़े बचे हो, तो आओ! तुम्हारा स्वागत गाँव के बच्चे अपने सरकारी मास्टर जी के साथ आधे घण्टे में उत्सव में करेंगे, फिर छुट्टी। तुम भी फ्री और मास्टर जी भी फ्री।

तो हे वसन्त ऋतु! थोड़ा अपडेट होकर आना। अब संस्कृत की प्रतीक्षा में मत रहना। आना, मटमैली धोती पहने अपने उस मजदूर किसान के लिये; आना, घूंघट में सिमटी नवविवाहिताओं के लिये; आना, उन चेहरों के लिये जिनकी झुर्रियों में तुम्हारी जवानी छिपी है; आना, उन टेसू के फूलों के लिये जो सिर्फ़ और सिर्फ़ तुम्हारी आहट सुनने के लिये जंगल में अकेले खड़े हैं!

आओ वसन्त! आओ वसन्त!

facebook ■ **सुनील व्यास**

महकै लगै दिगन्त तो समझो बसन्त है
बहकै लगै जो सन्त तो समझो बसन्त है
वइसे तो चाहे जऊन महीना हुवै मुला
घर आय जाय कन्त तो समझो बसन्त है

—अशोक टाटम्बरी

कला तथा भाषा के प्रति रुचिरोपण करता एक मुखौटा

facebook

MUKHOTA®
From Page TO Stage

कला और कलाकारों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से दिनाँक दिनाँक 25 सितम्बर 2011 को मुखौटा नामक संस्था की स्थापना की गयी। संस्था मुखौटा नाटक ग्रुप के नाम से समय-समय पर नुक्कड़ नाटक व समाज को जागरूक करने के अभियान चलाती है।

संस्था की संस्थापिका श्रीमती अंकिता शर्मा पेशे से अधिवक्ता हैं तथा सामाजिक कार्यों में नियमित योगदान देती रहती हैं। हिन्दी तथा उर्दू भाषा को बढ़ावा देने के लिये समय-समय पर कवि-सम्मेलन, कार्यशाला व अन्य कार्यक्रमों का आयोजन भी मुखौटा द्वारा किया जाता है। इन कार्यक्रमों में नवांकुरों को अवसर भी दिया जाता है और प्रख्यात कवियों व शायरों की शिरक़त से नवांकुरों को कविता तथा शायरी सीखने का अवसर भी मिलता है।

ऐसे अने क कार्यक्रमों में जाने-माने कवियों जैसे सर्वश्री अरुण जैमिनी, डॉ. विष्णु सक्सेना, चिराग़ जैन, शम्भू शिखर, नन्दिनी श्रीवास्तव, मनीषा शुक्ला तथा शरद नंनपर्वी आदि ने न केवल नए कवियों की कविताएँ सुनीं बल्कि मंचीय प्रस्तुति से लेकर लेखन की बारीक़ियों तक नवांकुरों के साथ विस्तृत चर्चा भी की।

संस्था के एक और पदाधिकारी श्री गौरव भटनागर भी तन-मन-धन से मुखौटा के माध्यम से हिन्दी कविता तथा कला की नई पीढ़ी को पोषित करने में संलग्न हैं। अनेक स्कूलों तथा सरकारी संस्थानों में नुक्कड़ नाटकों की प्रस्तुति के माध्यम से श्री गौरव भटनागर विद्यार्थियों में कलाओं के प्रति रुचिरोपण का कार्य निस्पृह भाव से कर रहे हैं। कविग्राम परिवार, मुखौटा के इस अभिनव प्रयास की सराहना करता है।■

गणतन्त्र दिवस का लालक़िला कवि-सम्मेलन

19 जनवरी, दिल्ली। देश की राजधानी दिल्ली स्थित हिन्दी भवन में हिन्दी अकादमी, दिल्ली ने गणतन्त्र दिवस कवि-सम्मेलन का आयोजन किया। कोविड की चुनौतियों के चलते लालक़िले पर आयोजित होने वाला यह कार्यक्रम इस बार छोटे-से सभागार में समाहित करना पड़ा किन्तु इस कार्यक्रम को आयोजित करके हिन्दी अकादमी, दिल्ली ने एक परम्परा को अवरुद्ध होने से बचा लिया। सरकारी नियमों की सीमाओं को देखते हुए इस बार इस कवि-सम्मेलन में श्रोतादीर्घा तथा कविमंच पर संख्या पक्ष कम अवश्य था किन्तु कार्यक्रम के उत्साह में कोई कमी नहीं थी।

दिल्ली के उपमुख्यमंत्री श्री मनीष सिसोदिया ने कवि-सम्मेलन का दीप प्रज्ज्वलन किया तथा कहा कि कोरोना वैक्सीन की तरह कवि-सम्मेलन की वैक्सीन भी बेहद आवश्यक है। कवि-सम्मेलन की अध्यक्षता डॉ. कुँअर बेचैन ने की। कार्यक्रम में डॉ. विष्णु सक्सेना, श्री दिनेश रघुवंशी, श्रीमती मालविका हरिओम, डॉ. कीर्ति काले, श्री ताराचन्द तनहा तथा श्री गुणवीर राणा ने काव्यपाठ किया। मंच का संचालन हिन्दी अकादमी के उपाध्यक्ष तथा सुप्रसिद्ध हास्य कवि श्री सुरेन्द्र शर्मा ने किया। ■

अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी उत्सव

10-11 जनवरी, दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय के हंसराज कॉलेज की ओर से विश्व हिन्दी दिवस के अवसर पर वैश्विक हिन्दी की नई दिशाएँ विषय पर विचार गोष्ठी आयोजित की गई। दो दिवसीय उत्सव का समापन कवि-सम्मेलन से किया गया जिसमें सर्वश्री अरुण जैमिनी, दिनेश रघुवंशी, डॉ. विनय विश्वास, ममता किरण तथा चिराग़ जैन ने काव्यपाठ किया। ■

नीरज की देहरी पर आयोजित हुआ नीरज जयन्ती का कवि-सम्मेलन

4 जनवरी, आगरा। गोपालदास नीरज जयन्ती के अवसर पर आगरा स्थित नीरज निवास पर महाकवि गोपालदास नीरज फाउण्डेशन ट्रस्ट तथा कवि-सम्मेलन समिति के संयुक्त तत्वावधान में कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में सर्वश्री अरुण जैमिनी, डॉ. विष्णु सक्सेना, चिराग़ जैन, शम्भू शिखर, डॉ. रुचि चतुर्वेदी, रमेश मुस्कान तथा पवन आगरी ने काव्यपाठ किया। कार्यक्रम का मंच संचालन डॉ. अर्जुन सिसोदिया ने किया तथा कार्यक्रम का संयोजन नीरज जी के पुत्र तथा सुविख्यात कवि श्री शशांक प्रभाकर ने किया। इस अवसर पर नीरज जी के परिवार के साथ आगरा के अनेक काव्यप्रेमी भी उपस्थित रहे। विधायक श्री पुरुषोत्तम खण्डेलवाल जी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।■

पूर्व मन्त्री के जन्मदिवस पर आशीर्वाद समारोह

7 जनवरी, गोण्डा। उत्तर प्रदेश के पूर्व मन्त्री श्री विनोद कुमार पण्डित सिंह ने अपना जन्मदिन उत्कृष्ट प्रतिभा सम्मान समारोह तथा आशीर्वाद समारोह के रूप में मनाया। इस अवसर पर अखिल भारतीय कवि-सममेलन का आयोजन किया गया जिसमें सर्वश्री डॉ. विष्णु सक्सेना, अमन अक्षर, प्रियांशु गजेन्द्र, शम्भू शिखर, अभय सिंह निर्भीक तथा विकास बौखल ने काव्यपाठ किया।■

गोरखपुर महोत्सव में कवि-सम्मेलन

13 जनवरी, गोरखपुर। गोरखपुर प्रशासन की ओर से आयोजित किये जाने वाले गोरखपुर महोत्सव में भव्य कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया। खुले आकाश के नीचे देर रात तक लगभग हज़ार लोगों ने कविताओं का रसास्वादन किया। इस कार्यक्रम में सर्वश्री दिनेश बावरा, डॉ॰ सुनील जोगी, डॉ॰ विष्णु सक्सेना, पद्मिनी शर्मा, डॉ॰ अखिलेश मिश्रा, रोहित शर्मा तथा गजेन्द्र सोलंकी ने काव्यपाठ किया। उल्लेखनीय है कि कवि-सम्मेलन में आमंत्रित कवियों से उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ ने कार्यक्रम से पूर्व अनौपचारिक मुलाक़ात भी की।■

मुख्यमंत्री आवास पर युवा दिवस कवि-सम्मेलन

12 जनवरी, देहरादून। युवा दिवस के अवसर पर उत्तराखण्ड के मुख्यमन्त्री श्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत के आवास पर कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में माननीय मुख्यमंत्री ने सभी आमंत्रित कवियों का स्वागत किया तथा पूरे कार्यक्रम में उपस्थित रहकर कविताओं का रसास्वादन किया। इस कवि-सम्मेलन में सर्वश्री डॉ॰ कुमार विश्वास, तेजनारायण शर्मा, रमेश मुस्कान, डॉ॰ राजीव राज तथा कविता तिवारी ने काव्यपाठ किया।■

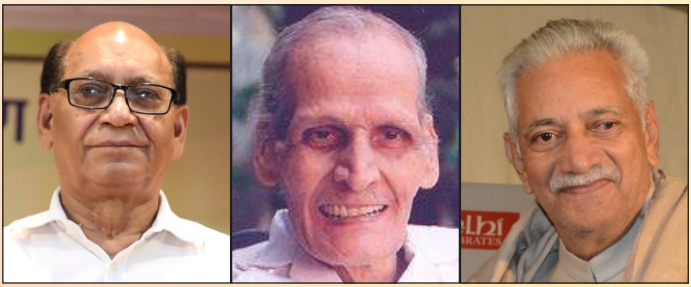

डॉ. कुँअर बेचैन तथा डॉ. शिवओम अम्बर महाकवि प्रदीप सम्मान से सम्मानित

25 जनवरी, भोपाल। मध्यप्रदेश संस्कृति विभाग द्वारा स्थापित राष्ट्रीय कवि प्रदीप सम्मान भोपाल स्थित रवीन्द्र भवन सभागार में डॉ. कुँअर बेचैन तथा डॉ. शिवओम अम्बर को प्रदान किया गया। इस अवसर पर कवि-सम्मेलन का भी आयोजन किया गया जिसमें सर्वश्री हेमंत श्रीमाल, सीता सागर, सर्वेश अस्थाना, संजय खत्री व प्रवीण अत्रे ने काव्यपाठ किया। मंचीय कविता के लिये निर्धारित यह सम्मान इससे पूर्व सर्वश्री गोपालदास नीरज, बालकवि बैरागी, सोम ठाकुर, माया गोविन्द, सुरेन्द्र शर्मा, हरिओम पँवार तथा अशोक चक्रधर को प्रदान किया जा चुका है। सम्मान में दो लाख रुपये की आयकर मुक्त राशि तथा प्रशस्ति पट्टिका प्रदान की जाती है। ■

गीत गुंजन कवि-सम्मेलन

10 जनवरी, इन्दौर। मातृभाषा उन्नयन संस्थान, स्टेट प्रेस क्लब और वुमन प्रेस क्लब मध्यप्रदेश द्वारा आयोजित गीत गुंजन कवि-सम्मेलन अभिनव कला समाज भवन में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में सर्वश्री नरेन्द्रपाल जैन, गौरी मिश्रा, पंकज प्रसून, गौरव साक्षी, मयूर पँवार और संदीप सांदीपनि आदि कवियों ने काव्यपाठ किया। मंच संचालन श्री अंशुल व्यास ने किया। इस अवसर पर श्री सत्यनारायण सत्तन को मातृभाषा उन्नयन संस्थान द्वारा स्वर्णाक्षर सम्मान से सम्मानित भी किया गया। डॉ. अर्पण जैन के सम्पादन में प्रकाशित 'गीत-गुंजन' पुस्तक का भी लोकार्पण इस कार्यक्रम में किया गया। ■

रंभापुर में कवि-सम्मेलन

16 जनवरी, झाबुआ। पश्चिमी मध्यप्रदेश के रंभापुर गाँव में गाँव मित्र मण्डल तथा स्थानीय पत्रकार संघ की इकाई ने मिलकर कवि-सम्मेलन आयोजित किया। श्री निसार पठान के संयोजन तथा श्री अजातशत्रु के संचालन में सर्वश्री कुँवर जावेद, कुलदीप रंगीला, एकता आर्य, हिमांशु बवंडर, सोनल जैन तथा पूर्णिमा तिवारी ने काव्यपाठ किया। कोरोना काल की परिस्थितियों पर हास्यरस के साथ-साथ करुणरस, शृंगार रस तथा वीर रस की कविताओं का श्रोताओं ने देर तक आनन्द उठाया। ■

छत्तीसगढ़ी भाषा का कवि-सम्मेलन आयोजित

16 जनवरी, गोंडखाम्ही। सतनाम मेला समिति, ग्राम गोंड़खाम्ही के ने सतनामी कवि-सम्मेलन का आयोजन गोड़खाम्ही गाँव में किया। इस कवि-सम्मेलन में सर्वश्री आशीष बघेल, गजानन्द पात्रे सत्यबोध, जुगेश बंजारे छिरहा, अश्वनी डायमण्ड, मणिशंकर दिवाकर गद्‌गद, जे पी डेहरे, ज्ञानी लहरे, डी पी लहरे मौज, सुखदेव सिंह अहिलेश्वर, कमलेश कुमार ढिंढे, पुष्पराज देवहरे, दुल्लीचंद आडिल नवगढ़िहा, आदित्य बर्मन, मुकेश भार्गव, दयालु भारती, चैतराम टण्डन, चंद्रप्रकाश पाटले, गणेश्वर आज़ाद, मनोज लहरे बेख़बर, असकरण दास जोगी और जैना चौरसिया ने काव्यपाठ किया। कार्यक्रम का संचालन श्री डी एल भास्कर ने किया।

इस अवसर पर दस सतनामी साहित्यकारों को सतनामी समाज में स्वाभिमान, आत्मबल व गौरव बढ़ाने के साथ-साथ समाजोपयोगी उत्कृष्ट साहित्य सृजन के लिए 'सतनामी रत्न सम्मान' से सम्मानित किया गया। ■

जयपुर में आयोजित हुआ देशराग

16 जनवरी, जयपुर। जवाहर कला केन्द्र में दैनिक नवज्योति का वार्षिक कार्यक्रम देशराग इस बार भी पूरे उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ। जयपुर के तमाम गणमान्य व्यक्तित्वों से सुसज्जित दर्शक दीर्घा के सम्मुख सर्वश्री विनीत चौहान, रमेश शर्मा, तेजनारायण शर्मा तथा संजय झाला ने काव्यपाठ किया। इस अवसर पर श्री विनीत चौहान को कप्तान दुर्गाप्रसाद चौधरी हिन्दी काव्य-कलश सम्मान से भी नवाज़ा गया। आयोजकों ने कोरोना योद्धाओं को सम्मानित करते हुए इस अवसर पर कोरोना से आगे बढ़कर लड़ने वाले योद्धाओं के प्रति भी आभार ज्ञापन किया।■

नेताजी सुभाष जयन्ती पर आयोजित हुआ राष्ट्रीय कवि-सम्मेलन

23 जनवरी, दिल्ली। द्वारका स्थित नेताजी सुभाष प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में नेताजी सुभाष चंद बोस के 125वें जन्मदिवस पर राष्ट्रीय कवि-सम्मेलन का आयोजन हुआ जिसमें सर्वश्री सुरेन्द्र शर्मा, डॉ. कुँअर बेचैन, अरुण जैमिनी, गजेन्द्र सोलंकी, डॉ. सीता सागर तथा चरणजीत चरण ने काव्यपाठ किया।■

नेताजी सुभाष प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय
द्वारा
नेताजी सुभाष चंद्र बोस
के 125 वें जन्म दिवस पर
राष्ट्रीय कवि सम्मेलन
का आयोजन
तिथि: 23 जनवरी, 2021, समय: दोपहर 12 बजे
स्थान:
डॉ. ए पी जे अब्दुल कलाम
लेक्चर थिएटर कॉम्प्लेक्स,
ने.सु.प्रौ.वि., सेक्टर 3 द्वारका, दिल्ली-78
आमंत्रित कवि:
श्री सुरेंद्र शर्मा, डॉ. कुंवर बेचैन
श्री अरुण जैमिनी, श्री गजेंद्र सोलंकी
डॉ. सीता सागर, श्री चरणजीत चरण
संयोजन: प्रदीप देसवाल
9205475025

कविग्राम के पाठकों के संदेश हमें निरन्तर मिल रहे हैं। प्रशंसा, आलोचना तथा सुझाव से भरे इन संदेशों को पढ़ते हुए हमें इस पत्रिका का महत्त्व भी समझ आता है और अपना कर्त्तव्य भी। आपके द्वारा भेजी गयी यही प्रतिपुष्टि किसी संचार प्रक्रिया को पूर्णता प्रदान करती है।

देश-विदेश से हमें प्राप्त हुए संदेशों में से कुछ संदेश हम यहाँ प्रकाशित कर रहे हैं। आपसे अनुरोध है कि भविष्य में जब भी प्रतिक्रिया दें तो केवल कविग्राम के आधिकारिक व्हाट्सएप नम्बर 8090904560 पर ही दें तथा संदेश के अंत में अपना नाम तथा अपने शहर का नाम अवश्य लिखें। -सम्पादक

जिस पत्रिका के सम्पादक मण्डल में इतने उच्चकोटि के कवि हों, उस पत्रिका का सभी रूपों में पूर्ण होना लाज़मी है। पत्रिका में जो भी शीर्षक निर्धारित किये गये हैं, वे अकल्पनीय हैं। पत्रिका के कम पृष्ठों में बहुत कुछ समेटने का सार्थक प्रयास सराहनीय है। हम अपने समय के रचनाकारों को तो सोशल मीडिया के माध्यम से पढ़-सुन लेते हैं परन्तु पुराने कवियों की अच्छी रचनाएँ कम ही पढ़ पाते हैं। आपने वो भी हमें पढ़ने के लिये उपलब्ध करवाया। इसमें कई पुराने कवि हैं जिनकी रचना प्रथम बार पढ़ने को मिली है।
कविग्राम की 'पुराने चावल' शृंखला भी अद्भुत है, जिसमें अनसुने गीत सुनने को मिलते हैं। पहले सोशल मीडिया, अब कविग्राम पत्रिका के माध्यम से साहित्य से जोड़ने व जोड़े रखने के लिये बहुत-बहुत धन्यवाद।

— नवीन कुमार, पीलीभीत, उत्तर प्रदेश।

आपके इस प्रयास से हम सभी साहित्यप्रेमियों को अपने साहित्य की दुर्गम उपलब्धियों का दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है। हम आपके आभारी हैं। इस शृंखला से राजनीति एवम् उसके अस्तित्व का कविता एवम् उसके कवित्व का पूरा बोध हुआ। नये साल में नये विचारों का प्रवेश मन के द्वार में हुआ।

— शिव विश्वकर्मा, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश।

चिराग़ जी के द्वारा शुरू की गयी ये पहल वास्तव में प्रशंसा की पात्र है। इस पत्रिका के माध्यम से हम लोगों को हिन्दी भाषा के उन लेखकों को जानने व पढ़ने का मौक़ा मिल रहा है, जिनके संवाद समय के साथ धुंधले हो गये हैं। साथ ही मोबाइल पर पढ़ने योग्य विषय वस्तु तकनीक के साथ अद्यतन रखी गयी है। अनुभव काफ़ी अच्छा रहा, आप इसी तरह हिन्दी भाषा की सेवा करते रहें।

— शिवम दीक्षित, शाहजहाँपुर, उत्तर प्रदेश

वाक़ई कविग्राम एक बहुत ही सुन्दर पत्रिका है। पत्रिका नहीं, बल्कि मैं तो इसे संग्रह-सागर का नाम देना चाहूंगा। कविग्राम को पढ़कर जो भाव मन में हैं, उन्हें लिख पाना मेरे लिये असम्भव जैसा प्रतीत हो रहा है। हर एक कवि ने अपनी उत्कृष्ट रचनाओं को इसमें शामिल किया है। इसकी कॉपी को प्रिंट करके अपने पास रख लिया है। मैं पूरी कविग्राम टीम को ही धन्यवाद देना चाहूंगा कि आपने यह हम तक नि:शुल्क पहुँचाई। जीवन की भागदौड़ में जिन किताबों को पढ़ते हैं तो वो इतना आनन्द नहीं देती, जितना कविग्राम में आया है।

— राजा ख़ान, श्योपुर, मध्यप्रदेश।

आपके द्वारा यह साहित्य सेवा आने वाले नवांकुरों के लिये एक नया मार्ग स्थापित करेगी। यह बहुत ही प्रशंसनीय और उत्कृष्ट कार्य सेवा है। संस्था को उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ।

— किशोर कुमार शर्मा, धौलपुर, राजस्थान।

रात भर पत्रिका को पढ़ा। हम जैसे पाठक को; जो जम्मू-कश्मीर के सुदूर ग्रामीण क्षेत्र में रहते हैं, जहाँ अच्छी किताबें पत्रिका इत्यादि पढ़ने के लिए बहुत कम मिलती हैं; यह पत्रिका एक वरदान है। यह बीते हुए कल, वर्तमान और भविष्य को अनूठे अंदाज़ में जोड़ती है।

— निशवन्त सिंह राणा, किश्तवाड़, जम्मू एवम् कश्मीर।

अति उत्तम प्रयास। श्रीमान्, एक सुझाव है कि एक भाग बच्चों के लिये डेडिकेटिड हो, तो उत्तम रहेगा। बहुत-बहुत साधुवाद।

— अनुज कुमार दलाल, शामली, उत्तर प्रदेश।

मैं अपने आपको बहुत सौभाग्यशाली मानता हूँ कि मुझे हमारे साहित्य के बारे में इतना कुछ जानने को मिल रहा है। बहुत-बहुत धन्यवाद।

— कमल किशोर शर्मा, भीलवाड़ा, राजस्थान।

शानदार प्रकाशन। एक बार जो पढ़ना शुरू किया, सारे काम भूलकर आख़िर तक पढ़ते ही रहे। सभी सदस्यों को हार्दिक शुभकामनाएँ।

— कुलभूषण द्विवेदी, अयोध्या, उत्तर प्रदेश।

साहित्य के हितार्थ 'कविग्राम' की पूरी टीम द्वारा लग्नपूर्वक किये जा रहे प्रयासों के लिये नमन एवम् साधुवाद। नि:संदेह कविग्राम साहित्यप्रेमियों, पाठकों एवम् मुझ सरीखे नये रचनाकारों के ज्ञानकोष में प्रतिदिन वृद्धि कर रहा है।

— कुशल कुशवाहा, ग़ाज़ियाबाद, उत्तर प्रदेश।

निकुंज शर्मा, वाशु पांडेय की कविताएँ संग्रह योग्य हैं। साधुवाद आपको, इस माध्यम से इन कवियों की रचना से परिचित कराने हेतु।

— अरुण द्विवेदी, वाराणसी, उत्तर प्रदेश।

हर पृष्ठ रोचक है। साहित्य का अनूठा संग्रह पढ़कर हर्ष हुआ, साथ ही सुकून की असीम अनुभूति भी हुई। आजकल के प्रतिस्पर्धी वातावरण में आपाधापी व्याप्त माहौल में कुछ हटकर अनुष्ठान लगा।

— सरिता वाजपेयी, शाहजहाँपुर, उत्तर प्रदेश।

1941 का कवि-सम्मेलन वाला कार्ड सचमुच हमारी साहित्यिक संस्कृति की धरोहर प्रदर्शित करता है। मुझे उसमें लिखे कवियों के नाम पढ़कर बहुत अच्छा लगा।

— कृष्णकांत शर्मा, वेरावल, गुजरात।

बहुत सुन्दर और सटीक पत्रिका। अच्छे कंटेंट के साथ। कहीं भी पढ़ते हुए यह नहीं लगा कि अब पेज पलट दिया जाए। निरन्तर उत्सुकता बनी रही अध्ययन की। ढेरों बधाई और शुभकामनाएँ।

— अंकुर सिंह अनजान, बाराबंकी, उत्तर प्रदेश।

हिन्दी भाषा के उत्थान में आपका यह कदम बहुत ही प्रशंसनीय है। इसके लिये हम आपके तहे-दिल से आभारी हैं।

— लक्ष्मण कुमार गुप्ता, अमृतसर, पंजाब।

अच्छी कविताओं को पढ़कर कुछ अच्छा लिखने का प्रयास करूंगा।

— आनन्द धीमन, नागदा, मध्य प्रदेश।

बहुत ही सुन्दर एवम् तकनीक से भरपूर। पहली बार साहित्य के साथ इतनी तकनीक संलग्न देखी है। अद्‌भुत, अकल्पनीय, अतुलनीय।

— कुलदीप भारतीय, ग़ाज़ियाबाद, उत्तर प्रदेश।

कविग्राम का प्रवेशांक पढ़कर बहुत ख़ुशी हुई। हालाँकि आपने विकल्प रखा है कि नये रचानाकर भी अपनी रचनाएँ 'कविग्राम' में प्रकाशित करवा सकते हैं, तथापि आपसे निवेदन है कि कविग्राम में नवोदित साहित्यकारों के लिये थोड़ी-सी अतिरिक्त जगह रखें, जिससे कि इस मंच पर कलमकारों को समुचित स्थान मिल सके।

— कमल पुरी, जैसमलमेर, राजस्थान।

कविग्राम का यह अंक मुझे अत्यधिक पसन्द आया। मैंने इसकी एक-एक पंक्ति पढ़ी। कविग्राम से जोड़ने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

— अनिल अवस्थी, औरैया, उत्तर प्रदेश।

अद्‌भुत साहित्यिक पत्रिका है। आपने तो अपना स्तर कादम्बिनी सरीखा रखा है। अभिभूत हूँ। बेहद सुखद अहसास है।

— अरविन्द कुमार मिश्रा, डुमरांव, बक्सर, बिहार।

आपको इस व्हाट्सएप डिजिटल पत्रिका के सम्पादन के लिए कोटि-कोटि बधाइयाँ। निश्चित ही आपकी यह सराहनीय पहल मील का पत्थर बनेगी। आपकी सार्थक परिकल्पना और उसे मूर्त रूप में साकार करने के इस शानदार कार्य को मैं शत-शत प्रणाम करता हूँ।

— सुनील त्रिपाठी, लखनऊ, उत्तर प्रदेश।

कविग्राम को सुविख्यात रचनाकार डॉ. हरिसिंह पाल जी के माध्यम से व्हाट्सएप पर अवलोकन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। कविग्राम स्वयं में बहुत ही बेहतरीन पत्रिका है। पत्रिका में ढेर सारी कविताएँ, लेख पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। पत्रिका में ढेर सारे स्तम्भ पत्रिका के बहुआयामी होने को सिद्ध करते हैं। पुराने चावल स्तम्भ भी बहुत आकर्षित करता है। मैं यही निवेदन करूंगा कि कविग्राम को ऑनलाइन पत्रिका बना दिया जाए और आनन्द आ जाएगा।

— शिवकुमार दीपक, सादाबाद, उत्तर प्रदेश।

नवम्बर अंक देखा। सृजनतीर्थ वास्तव में एक साहित्यिक तीर्थ लगा। पत्रिका के लिये की गयी मेहनत दिखाई दे रही है।

— कमलेश द्विवेदी, कानपुर, उत्तर प्रदेश।

इक्कीस पेजों की इस पत्रिका में बहुत सारा ज्ञान भरा है और पुरानी यादें भी इससे ताज़ा हो रही हैं। जब हम पैदा भी नहीं हुए थे तब के कवि-सम्मेलनों के कार्ड देखने को मिले, उनसे बहुत ख़ुशी हुई। काका हाथरसी की कॉलेज स्टूडेंट कविता आज भी समसामयिक है।

— ललित शर्मा, दिल्ली।

बहुत उम्दा एवम् ज्ञानवर्द्धक पत्रिका है। इसमें संकलित सभी लेख तथा कविताएँ मुझे बहुत पसन्द आयी। इसमें जो आवरण कथा है राजनीति में काव्यनीति, वह बहुत शानदार एवम् स्पष्ट है। उसमें बिना किसी लागलपेट के जो सही है, वह लिखा गया है। चिराग़ सर ने बहुत ही अच्छा हिन्दी साहित्य के कवियों के राजनीति में योगदान को रेखांकित किया। इन्होंने चन्दरबरदाई, अमीर ख़ुसरो से लेकर आज तक के सभी महत्त्वपूर्ण कवियों को रेखांकित करते हुए राजनीति में काव्य की भूमिका पर बहुत महत्त्वपूर्ण प्रकाश डाला है।

— अंकित कुमार सिंह, वाराणसी, उत्तर प्रदेश।

कविग्राम जैसी अनुपम साहित्यिक पत्रिका साहित्यिक अभिरुचि के व्यक्तियों के लिए अनुपम उपहार है।

— डॉ. आर पी तिवारी, उज्जैन, मध्य प्रदेश।

शानदार अंक। पद्म सम्मानों पर बेहद जानकारीपरक आलेख के लिये बहुत बधाई। प्रख्यात नवगीतकार आदरणीय यश भारती माहेश्वर तिवारी जी का गीत मार्मिक रहा लेकिन उसकी प्रस्तुति बेहद ख़राब रही। पूरे पृष्ठ पर गीत को चित्र सहित दिया जाना चाहिये था।

— डॉ. मनोज रस्तोगी, मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश।

पद्म पुरस्कारों पर आप द्वारा संयोजित जानकारी बहुत अच्छी लगी। मेहनत से किया गया काम है और उसके अंत में शरद जोशी जी का किस्सा भी रोचक लगा। माहेश्वर तिवारी जी का 'गये साल का गीत' भी अच्छी अभिव्यक्ति लगी। किशन सरोज जी का 'हमारे देश का आकाश' समसामयिक नहीं लगा। पुरानी अभिव्यक्ति प्रतीत होती है। दिये गये उदाहरण पुराने युद्धों से प्रेरित लगते हैं। नीरज जी के नाम पर लखनऊ में तिराहे का नामकरण होगा, जानकर गौरव अनुभव हुआ।

— ओ पी मिश्रा, ग्रेटर नोएडा, उत्तर प्रदेश।

कविग्राम का यह अंक भी पहले के अंकों की तरह बहुत ही उम्दा रचनाएँ और बहुत महत्त्वपूर्ण जानकारी संजोए हुए है। पूरी टीम का बहुत-बहुत आभार और साधुवाद।

— लोकेश चौधरी, उदयपुर, राजस्थान।

वाह, हर स्तम्भ लाजवाब। फुलवारी के तहत निकुंज शर्मा की मौन रहना ही उचित है... क्या कहना।

— तुलसी विश्वकर्मा, चित्रकूट, मध्य प्रदेश।

कविग्राम टीम को बहुत-बहुत बधाई एवम् शुभकामनाएँ। पत्रिका के माध्यम से प्रसिद्ध पंक्तियों के वास्तविक रचनाकार की जानकारी भी प्राप्त हुई, जैसे 'नदी के तट पे भी यदि ये सियासी लोग बस जाएँ।'

— शुभम सार्थक, उदयपुरा, रायसेन, मध्य प्रदेश।

कविग्राम का प्रवेशांक प्राप्त हुआ। अंक बहुत ही शानदार लगा। इस सराहनीय और सार्थक पहल के लिये हार्दिक बधाई।

— मनोहर मनोज, कटनी, मध्य प्रदेश।

सर! कविग्राम का पहला अंक मुझे बहुत ही ज़्यादा पसन्द आया। इतना ज़्यादा कि एक बार पढ़ने बैठा तो अन्त तक पढ़ता चला गया। मेरे विचार में इसमें एक स्तम्भ और होना चाहिए 'नवांकुर'। इसमें उनको स्थान मिले, जिन्होंने अभी-अभी लिखना प्रारम्भ किया है। आशा है कि कविग्राम टीम इस पर विचार अवश्य करेगी।

— शैलेष ओझा, बलिया, उत्तर प्रदेश।

कविग्राम के नवम्बर अंक की आवरण कथा 'सृजन तीर्थ' के माध्यम से आपने बहुत सारे साहित्यकारों के स्मारकों और संस्थानों की घर बैठे अद्‌भुत सैर करवा दी। कविग्राम के इस अंक की माला में आपने जितनी भी कविताएँ पिरोई हैं, सभी की ख़ुशबू शानदार है।
दिसम्बर अंक हर बार की तरह ज्ञानवर्द्धक और रोचक है। सम्पादकीय आलेख कवियों के प्राचीन काल से चले आ रहे राजनैतिक महत्त्व का बख़ूबी वर्णन करता है। आवरण कथा 'राजनीति में काव्यनीति' लेख में राजनीति में भी सक्रिय रहे सभी कवियों का स्मरण कर आपने बहुत ही उम्दा जानकारी जुटाई है।

— नरेश कानूनगो, बेंगलूरू, कर्नाटक।

हमें बहुत अच्छा लगता है जब आप हमें कविग्राम का नया अंक भेजते हैं। हमें इस पत्रिका का हमेशा इंतज़ार रहता है।

— ऋतु नानन पाण्डेय, एम्स्टर्डम, नीदरलैंड्स।

कविग्राम व्हाट्सएप पत्रिका एक नया अनुभव है। कोविड के इस मुश्किल समय में शीत लहर सी ये पत्रिका आनन्द दे गयी। घर बैठे इतनी बढ़िया पठनीय सामग्री मिलना बहुत ही लाभदायक व शुभकारी है। आपके सम्पादन ने अंक को और भी ख़ूबसूरत बना दिया है। कवियों के जन्मदिन से लेकर अन्य महत्त्वपूर्ण दिवस, पद्य व गद्य की ख़ूबसूरत रचनाओं से भरा यह अंक.... आपको अनन्त शुभकामनाएँ!

— सुषमा भण्डारी, दिल्ली।

सम्पादक मण्डल और पत्रिका का स्तर बहुत ही समृद्ध है। पढ़कर मन आह्लादित हो उठता है।

— अजय पाण्डेय, सुल्तानपुर, उत्तर प्रदेश।

नवम्बर 2020 अंक पढ़ने का अवसर मिला। अच्छी सामग्री का चयन, सारगर्भित सम्पादकीय, दल-बदल रचना तो व्यंग्य परन्तु यथार्थ। अन्य सामग्री भी अच्छी। अनेकशः मंगलकामनाएँ।

— सतीश चन्द्र भगत, बनौली, दरभंगा, बिहार।

हम नवोदित कलमकारों के लिए आपकी यह पत्रिका बहुत उपयोगी सिद्ध होगी। बहुत कुछ जानने और सीखने को मिलेगा।

— प्रीति केसरवानी, गंगटोक, सिक्किम।

कविग्राम साहित्यिक पत्रिका भला किसे न भाती होगी। साहित्य में रुचि रखनेवालों के लिए यह अनमोल तोहफ़ा है।

— हरेन्द्र कुशवाहा, दतिया, मध्य प्रदेश।

'चिराग़' अंजिष्ठ का प्रतिबिम्ब है, जिसकी प्रतिबद्धता के समक्ष असंभव शब्द ही त्राहिमाम् का शोर करने लगता है। मैं इस प्रतिबिम्ब स्वरूप 'चिराग़' का अंतस्-सिंधु की गहराई से अभिनंदन करता हूँ और इस शुभकर्म से स्वयं ही गौरव का अनुभव कर रहा हूँ।

— योगेन्द्र शर्मा, भीलवाड़ा, राजस्थान।

कविग्राम के प्रवेशांक के हर पृष्ठ को पढ़कर मन को आश्वस्ति मिली है कि यहाँ से साहित्य जगत् फिर से एक और नये उत्थान की ओर अग्रसर होना शुरू हो गया है।

— भूमिका जैन, आगरा, उत्तर प्रदेश।

ये एक पहल ही नहीं अपितु ऐसी विचारधारा बनने वाली है, जिसको हर वो व्यक्ति भी पढ़ने और सुनने की लालसा रखेगा। जिसका कविता से भले कोई सरोकार न हो। यह पहल वाक़ई में उद्देश्य को सिद्ध होता देखेगी बहुत कम समय में और नई पीढ़ी में कविता के मर्म को समझने और संस्कृति से जुड़ने को बाध्य करेगी।

— गोविन्द सुमन, झालावाड़, राजस्थान।

प्यासे को जैसे पानी की खोज होती है, उसी तरह साहित्य पिपासु का साहित्य चर्चा में ही मन रमता है। सोशल मीडिया पर 'कविग्राम' एक सौगात लेकर आया है। वरना सोशल मीडिया पर हल्की-फुल्की चीज़ें ही पढ़ने को मिलती रही हैं। एक सारगर्भित साहित्य का बीड़ा उठाने के लिए 'कविग्राम' के स्वप्नद्रष्टाओं का हृदय से आभार प्रकट करता हूँ। पत्रिका का मुखपृष्ठ अतिमनभावन है। इसमें सारे स्तम्भ अपने आपमें अन्यतम हैं। 'कवि-कुनबा' से कितने ही पुराने भूले-बिसरे महान साहित्यकारों के चित्र दिल में उतरने लगे। 'कवि-सम्मेलन संग्रहालय' में 'पुराने चावल' के जरिये 1941 ईस्वी के कवि-सम्मेलन का इतिहास बहुत रोचक लगा। कविग्राम के उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

— भारत भूषण झा, धनबाद, झारखण्ड।

किसी पत्रिका का स्तर उसमें प्रकाशित सामग्री पर निर्भर करता है। कविग्राम पत्रिका अत्यन्त स्तरीय पत्रिका है, इसमें कोई सन्देह नहीं। इसके सभी स्तम्भ पाठकों को आकर्षित करने में सक्षम हैं। पद्म सम्मानों पर आलेख अत्यन्त सटीक है। कविग्राम वस्तुत: कवियों का सच्चा ग्राम है, जहाँ सभी रचनाओं को श्रेष्ठ सम्पादकीय प्रस्तुति मिलती है। प्रबुद्ध सम्पादन के लिए हार्दिक बधाई। यह पत्रिका रचनाकारों के चयन में बहुत सतर्क है। हृदय से धन्यवाद।

— डॉ. शशि तिवारी, आगरा, उत्तर प्रदेश।

कविग्राम का जो पुराना अंक पढ़ना चाहें उस पर स्पर्श करें

श्रद्धांजलि

श्री नरेन्द्र दाधीच

जन्म : 1 मार्च 1955
निधन : 25 जनवरी 2021

आशाओ! तुम पीड़ा के घर होती जाना
वहाँ सीढ़ियाँ चढ़ता तुमको दर्द मिलेगा

पथराई आँखों का काजल जस का तस है
रसवन्ती होंठों का अमृत भी नीरस है
भाव, अभावों की कोठी में बन्द पड़े हैं
दर्द डूबसी आशाओं की हर इक नस है
अरी हवाओ! पतझड़ के घर होती जाना
हरियाली से लड़ता तुमको दर्द मिलेगा

सपनों के जमघट में खोया जीवन सारा
विष के कूपे में बन्दी है अमृतधारा
आशाओं की किरण के आगे बादल काले
जैसे टूटा हो बस्ती में पुच्छल तारा
अरी लताओ! काँटों के घर होती जाना
नई कहानी गढ़ता तुमको दर्द मिलेगा

लेकिन मेरा धैर्य डिगाना नामुमकिन है
रात अन्धेरी कितनी भी हो, होता दिन है
सुन लो, बहती रेगिस्तानी गर्म हवाओ!
अगर इरादा हो तो होता सब मुमकिन है
सुनो, दर्द को गढ़ने वाले सारे कारण
अब रामायण पढ़ता तुमको दर्द मिलेगा

कविग्राम

— कुछ आवश्यक सूचनाएँ —

कविग्राम पत्रिका में जहाँ कहीं भी सोशल मीडिया का कोई आईकॉन बना दिखे वह किसी न किसी **सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म लिंक** है। उसे स्पर्श करने पर आप उस पृष्ठ से सम्बद्ध इंटरनेट पेज पर पहुँच जाएंगे।

कविग्राम के व्हाट्सएप नम्बर से हर महीने के अन्त तक नया अंक प्रेषित कर दिया जाता है। यदि किसी तकनीकी कारणवश **आपको नया अंक न मिले तो** कृपया हमें इसकी सूचना दें। हम आपको अंक पुन: प्रेषित करेंगे।

यदि आप लेखक हैं तो अपनी रचना केवल कविग्राम की ईमेल पर भेजें। व्हाट्सएप पर प्रेषित की गयी रचना स्वीकार नहीं की जायेगी। पद्य का विषय कुछ भी हो सकता है किन्तु गद्य केवल कवि-सम्मेलन, कवि-जीवन तथा काव्य के इर्द-गिर्द ही स्वीकार किया जायेगा।

यदि आपके क्षेत्र में कोई कवि-सम्मेलन हो अथवा किसी कवि की कोई सुख-दु:ख की सूचना हो तो वह व्हाट्सएप के माध्यम से हमें बताएँ। हम उसका **समाचार** प्रकाशित करेंगे।

कविग्राम वर्तमान में फेसबुक पेज, यूट्यूब चैनल, टेलीग्राम चैनल, जीमेल, वेबसाइट तथा व्हाट्सएप पर उपलब्ध है। नीचे दिये गये आईकॉन्स पर स्पर्श करके आप हमसे इन प्लेटफॉर्म्स पर जुड़ सकते हैं।